राष्ट्रीय चेतना और महाकवि श्रीकृष्ण 'सरल'

*डॉ. सरोज मालपानी

पराधीनता की बेड़ी में जकड़ी भारत माता,
राष्ट्रीय चेतना उदित हुई बन भारत भाग्य विधाता।
कविगण की ओजस्वी वाणी ने जन–मन को झकझोरा।
राष्ट्रीय चेतना ले आई कविता में नया सवेरा।
'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' ने भारत की दुर्दशा बताई।
'मैथिलीशरण' जी ने मातृभूमि की महिमा गाई।
'माखनलाल चतुर्वेदी' और 'बालकृष्ण शर्मा नवीन'।
'सियारामशरण' और राष्ट्रकवि 'दिनकर' जैसे हुए कवि प्रवीण।
'शिवमंगल सिंह सुमन' ने भी देशानुराग दर्शाया।
राष्ट्रीय चेतना धारा से कविता–कानन सरसाया।
श्रीकृष्ण 'सरल' भी इसी काव्य–कानन के शोभाधायक फूल।
किन्तु काव्य मर्मज्ञ स्मरण करना उन्हे जाते हैं भूल।
जिनकी रग रग में राष्ट्र प्रेम था रचा बसा अविरल अभिराम।
ऐसे राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण 'सरल' को है कोटिशः प्रणाम।

मध्यप्रदेश में गुना जिले के अशोक नगर में जन्म लेकर महाकालेश्वर की पावन नगरी उज्जैन में (लगभग सन् 1940 से 2000 तक) अनवरत साहित्य साधनारत महाकवि श्रीकृष्ण 'सरल' का काव्य राष्ट्रीय चेतना का अक्षय कोष है। कवि ने जनजीवन की पीड़ा, विवशता और पराधीनता जनित हीन अवस्था को निकट से देखा था। उन्होंने आजादी से पूर्व त्याग और बलिदान रूपी हवन संस्कृति को भी देखा था और आजादी के पश्चात् स्वार्थान्ध भवन संस्कृति को भी देखा था। बलिदानियों द्वारा किये गए यज्ञ को भी देखा था और यज्ञ के बाद होने वाली लूट–खसोट भी देखी थी। अतः भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु उन्होने राष्ट्रीय चेतना की मशाल थामकर साहित्य की शमशीर से अशुभ, अशोभन एवं अन्याय के प्रतिकार का बीड़ा उठा लिया। आत्माहुति देकर देश रक्षा हेतु सन्नद्ध क्रान्तिकारियों के विषय में उनका यही कहना था कि–

क्रान्ति के जो देवता, मेरे लिए आराध्य,
काव्य साधन मात्र, उनकी वन्दना है साध्य।[1]

वे शहीदों के बलिदान को राष्ट्र पर कर्ज मानते हैं और मातृभूमि के सच्चे सपूत होने का फर्ज निभाते हुए उन्होंने कहा है कि–

मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ।
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है, मैं उसे चुकाया करता हूँ।[2]

लगभग 130 कृतियों की सर्जना कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने वाले सरल जी ने शताधिक रचनाएँ क्रान्तिकारियों और शहीदों पर लिखी हैं। राष्ट्रीय चेतना संवलित स्फुट कविता संग्रहो के साथ ही खण्ड काव्य व चौदह महाकाव्यों की अटूट श्रृंखला ने साहित्य जगत को विस्मय विमुग्ध कर दिया। सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र, शहीद अशफाक उल्ला खाँ व क्रांतिगंगा जैसे महाकाव्य लिखने वाले श्रीकृष्ण 'सरल' अकेले ऐसे कवि हैं जिन्होने राष्ट्रीय धारा के मूर्धन्य कवियों के न रहने पर भी मन्द पड़ती राष्ट्रीय चेतना की मशाल को बुझने नही दिया। वे मानते थे कि–

प्रेरणा शहीदों से हम अगर नहीं लेंगे,
आजादी ढलती हुई साँझ हो जाएगी।
यदि वीरों की पूजा हम नहीं करेंगे तो,
यह सच मानो वीरता बाँझ हो जाएगी।[3]

इसीलिए कवि वीर बलिदानियों की याद दिलाकर राष्ट्रीयता की भावना को पुनर्जीवित करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि–

क्यों भूल गये राणा प्रताप की उस बलिदान कहानी को ?
क्यों भूल गये हम नर–नाहर उस शेर शिवा अभिमानी को ?
क्यों याद नहीं आती हमको रणचण्डी लक्ष्मी मर्दानी ?
क्यों याद न आते स्वतन्त्रता के हमको अगणित सेनानी?[4]

अतीत के गौरव गान और परतन्त्रता की भयावहता का चित्रण करते हुए व अन्याय के विरूद्ध खड़े होने की प्रेरणा देते हुए सरल जी कहते हैं–

अभिशाप दासता से बढ़कर दूसरा नहीं,
अभिशाप और भी बड़ा यत्नहत होना है।
यह माना अन्यायी पापी होता ही है,
पर महापाप उसके आगे नत होना है।[5]

चेतनाधर्मी कवि स्वतंत्रता का महत्त्वांकन करते हुए प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षार्थ भारतवासियों को संकल्पबद्ध करना चाहते हैं कि–

शीश पर धर देश की मिट्टी करो प्रण आज।
प्राण देकर भी रखेंगे, इस धरा की लाज।[6]

मातृभूमि की वन्दना के साथ ही वे बलिदान भावना के महत्त्व को रेखांकित करते हुए शहीद स्मरण व स्तवन भी करते हैं। क्योंकि स्वतंत्रता के पावन पद स्पर्श हेतु रक्त स्नात होना पड़ता है–

बिछते न पाँवड़े आजादी के स्वागत को,
वह लाशों के टीलों पर चलकर आती है।
उद्यानों के निर्झर न रिझाते हैं उसको,
शोणित के फव्वारों से वह हर्षाती है।[7]

इसलिए सरलजी ने स्वाधीनता की रक्षा हेतु अपराजेय युवा शक्ति का आह्वान करते हुए कहा है कि–

राष्ट्र के शृंगार मेरे देश के साकार सपनों,
देश की स्वाधीनता पर आँच तुम आने न देना।
जिन शहीदों के लहू से लहलहाया चमन अपना,
उन वतन के लाडलों की याद मुर्झाने न देना।[8]

तन–मन–धन से राष्ट्रीय चेतना के प्रति समर्पित सरलजी के सम्बन्ध में महान क्रांतिकारी पं. परमानंदजी ने उनके रचनाकाल में ही कह दिया था कि 'सरल जी एक जीवित शहीद हैं, उनकी काव्य साधना तपस्या कोटि की साधना है।'[9]

विपुल साहित्य की सर्जना करने वाले सरलजी को विभिन्न संस्थाओं द्वारा 'भारत गौरव', 'मालव–रत्न', 'राष्ट्र–रत्न', 'क्रांति कवि' व 'क्रांतिरत्न' जैसे अलंकरणों से विभूषित किया गया है। 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित सरलजी ऐसे अल्पज्ञात साहित्यकार हैं जिन्होने असाधारण असंगतियों के रहस्यमय घटाटोप में राष्ट्रीय चेतना की विद्युच्छटा बिखेर कर माँ भारती के मंदिर में अक्षय प्रकाश फैला दिया। यद्यपि इस अद्वितीय शिल्पी की चित्ताकर्षक रचनाएँ अभी प्रबुद्ध पाठक वर्ग की पैनी नजरों से ओझल रही हैं किन्तु श्रीकृष्ण 'सरल' की राष्ट्रीय चेतना युक्त रचना सुवास निश्चय ही दिग्दिगन्त व्यापिनी होगी, ऐसा मेरा विश्वास है क्योंकि–

राष्ट्रीय चेतना के संवाहक, राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण 'सरल'।
शिव सदृश जग हितकारक बन पान किया वैषम्य गरल।
अमर शहीदों का चारण बन दिया काव्य–अमृत का दान।
निर्मल मन–सरोजयुत कवि, पायेंगे निश्चय समुचित मान।

*व्याख्याता
हिन्दी विभाग
श्रीरतनलाल कंवरलाल पाटनी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय किशनगढ़ (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. क्रान्तिगंगा –श्रीकृष्ण 'सरल', पृ. सं. 8
2. राष्ट्रवीणा –श्रीकृष्ण 'सरल', पृ. सं. 15
3. अजेय सेनानी चन्द्रशेखर आजाद (महा.) सरल महा. ग्रंथावली, पृ. 269
4. सरदार भगतसिंह (महा.) श्रीकृष्ण 'सरल' पृ. सं. 325
5. बागी कर्तार (महा.) सरल महा. ग्रंथावली पृ. सं. 814
6. सरदार भगतसिंह (महा.)–श्रीकृष्ण 'सरल', पृ. सं. 35
7. क्रान्तिगंगा (महा.)–श्रीकृष्ण 'सरल', पृ. सं. 452
8. राष्ट्रवीणा –श्रीकृष्ण 'सरल', पृ. सं. 24
9. क्रान्तिकवि–श्रीकृष्ण 'सरल'–कु. गोमती शनकुशल (प्राक्कथन से उद्धृत)